कालचक्र को जान निश्चिंत रहें

- ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

मुझे याद आता है कि एक बार एक भाई थे। उनका कार एक्सीडेंट हुआ। दोनों पैर फ्रैक्चर हो गये, हॉस्पिटल में थे। जब हमें पता चला तो सोचा मिलके आते हैं। जब हम उस भाई से मिलने गए तो हमने उस भाई को कहा कि आप भगवान को याद करो तो सब ठीक हो जायेगा। उसको इतना गुस्सा आया कि वो कहने लगा कि भगवान का नाम नहीं लो मेरे सामने। भगवान बहुत बुरा है वो सबका बुरा करता है। मुझे आश्चर्य लगा क्योंकि कोई नास्तिक नहीं बोल रहा था। भगवान में आस्था रखने वाला बोल रहा था। लेकिन बार-बार उसके मुख से एक ही बात निकल रही थी कि बहन जी मैंने कभी किसी का बुरा नहीं किया, फिर मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ! अरे, फ्रैक्चर हुआ है थोड़े दिनों में ठीक हो जाओगे, चलना आरम्भ कर दोगे, जान तो बच गई! लेकिन उसको ये बात हज़म नहीं हो रही थी कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों? मेरे साथ ही ऐसा क्यों? आखिर हमें महसूस होने लगा कि जितनी देर हम यहाँ खड़े रहेंगे इस भाई का गुस्सा और ज़्यादा बढ़ता जायेगा। इसीलिए बैटर है कि हम बाहर निकल जायें। हम जा ही रहे थे, उनकी पत्नी ने देखा तो वो तुरन्त आई हमारे पास और कहने लगी कि बहन जी अगर कुछ उल्टा-सीधा कह दिया हो तो हमें क्षमा कर देना।

मैंने कहा कि एक बात जाननी थी कि भाई तो भगवान में आस्था रखते हैं एक कार एक्सीडेंट क्या हुआ जो इतना भगवान के ऊपर नाराज़ होकर बोल रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी बात नहीं है। हमने पूछा तो कैसी बात है? उन्होंने बताया कि वो कोई लायन्स का या रॉटरी के गवर्नर थे और हमेशा समाज के लिए बहुत अच्छा काम करते थे। अब उनका टेन्योर पूरा हो रहा है, तो कोई इंटरनेश्नल गैदरिंग होती है। और उस गैदरिंग में उनको अवॉर्ड द्वारा सम्मानित किया जाना था। लेकिन दस दिन पहले ये कार एक्सीडेंट हो गया। अब दस दिन में तो ठीक होकर नहीं जा सकते थे। दोनों पैर फ्रैक्चर थे। तो इसीलिए उनके सामने बार-बार वही दृश्य आ रहे थे कि अरे दुनिया भर से बड़े-बड़े लोग वहाँ आयेंगे, सबके बीच में मेरा सम्मान होना था, मुझे अवॉर्ड मिलना था और अब कुछ भी नहीं मिलेगा। ये मौका मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा गर्व था। इसीलिए उनको गुस्सा आ रहा था।

हमारे सामने ही उनको किसी ने कह दिया कि भगवान को क्यों गाली दे रहे हो? कर्म का हिसाब-किताब भी तो अपना होता है ना, वो भी तो भोगना ही पड़ता है। उसको और गुस्सा आया कि कर्म का हिसाब-किताब मैं कहाँ मना कर रहा हूँ। लेकिन वहाँ से आने के बाद भगवान हिसाब-किताब नहीं ले सकता था। पहले ही लेना था। फिर उसके थोड़ी देर बाद हम वहाँ से आ गये।

आठ-दस दिन के बाद गुरुवार का दिन था, तो सोचा चलो बाबा को अब भोग लगा है, भाई के लिए भोग ले जाते हैं। हो सकता है भाई की मानसिक स्थिति ठीक हुई हो। जब हम गये तो हमको देखा तो कहने लगे कि आओ बहन जी आओ। बोला भगवान जो करता है ना वो अच्छा ही करता है। जो होता है ना अच्छे के लिए ही होता है। मैंने पूछा क्या हुआ? उसने न्यूज़पेपर उठा कर दिखाया कि जिस फ्लाइट में मैं जाने वाला था वो फ्लाइट क्रैश हो गया। सारे लोग खत्म हो गए। कहने लगा कि बहन जी अगर मेरा ये एक्सीडेंट नहीं होता तो मैं उसी फ्लाइट में होता। अवॉर्ड तो मिलना ही नहीं था और जीवन भी चला जाता।

दस दिन उनका यही सवाल था कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ? फिर वही कहते हैं कि ये छोटा-सा एक्सीडेंट करके भगवान ने मुझे रोक लिया। आज मुझे महसूस होता है कि भगवान ने मेरे जीवन में सबसे बड़ा अवॉर्ड मुझे दिया। उसने मुझे जीवनदान दिया। इससे बड़ा अवॉर्ड और क्या हो सकता है! मेरे जीवन के सबसे बुरे दिन ये दस दिन गए, स्ट्रेस में गए। तो ये ज्ञान पहले क्यों नहीं आता है? तो मैंने कहा कि समय का शुक्र करो कि समय ने दस दिन के अन्दर पर्दा खोल दिया कि क्या अच्छा समाया हुआ था। कई घटनायें जीवन में ऐसी घटती हैं कि समय एक साल के बाद पर्दा खोलता है। साल के बाद जब समय का पर्दा उठता है तो यही कहते हैं कि अच्छा हुआ ऐसा हुआ। तो पहले ही कह दो। जो हुआ वो अच्छा।

एक कालचक्र 5000 साल का है और ऐसे 5000 साल का चक्र इस पृथ्वी के ऊपर कितनी बार घूम चुका है, अनगिनत बार। ये 5000 साल का कालचक्र किस तरह चलता है, उसको दिखाया गया है स्वास्तिका के रूप में। स्वास्तिका हर शुभ कार्य के लिए लगाया जाता है। स्वास्तिका का मतलब है सु-अस्ति। सु माना शुभ और अस्ति माना जो सदा ही शुभ है। यानी ये कालचक्र की घड़ी सदा ही शुभ है। कोई घड़ी बुरी है ही नहीं। इसीलिए गीता के सार में भगवान ने यही कहा कि हे अर्जुन! जो हुआ वो भी अच्छा, जो हो रहा है वो भी अच्छा और जो होगा वो भी बहुत अच्छा। तुम निश्चिन्त रहो। तीनों घड़ी अच्छी हैं, बुरा कुछ है ही नहीं इस संसार में।

यह जीवन है

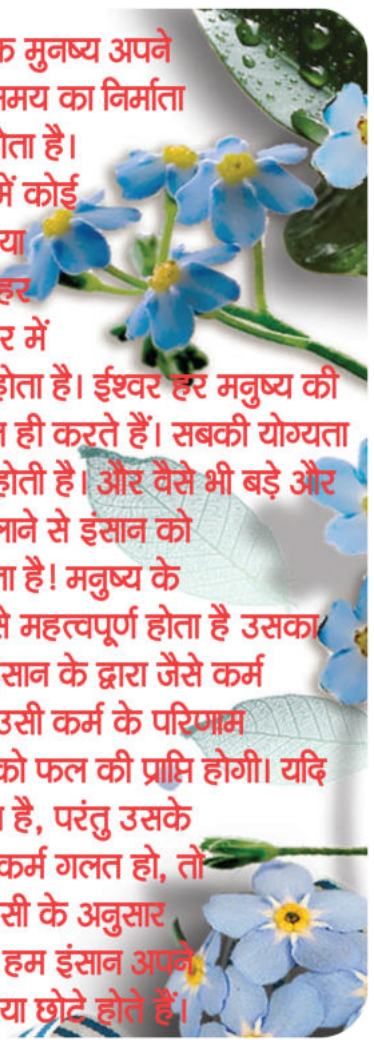

ख्यालों के आईने में...

रई-पिथौरागढ़(उत्तराखंड)। दिल्ली,पीतमपुरा के कनेक्शन में खोली गई गीता पाठशाला द्वारा 'द पावर ऑफ पॉज़िटिविटी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. कनिका बहन। साथ हैं कर्नल भुवन सिंह सती,ऑफिसर इन चीफ ऑफ जनरल बी.सी. जोशी आर्मी पब्लिक स्कूल।

धमतरी-छ.ग.। महाशिवरात्रि एवं महिला दिवस पर 'महान बनाए नारी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता, कांता राठी,अध्यक्षा माहेश्वरी महिला मंडल, रंजना साहू,विधायक,धमतरी, पूर्व विधायक अर्चना चौबे, डॉक्टर भारती राव,पूर्व अध्यक्षा महिला क्लब, अनीता मित्तल,उपाध्यक्ष इनरव्हील क्लब, प्रभा मिश्रा,अध्यक्षा ब्राह्मण समाज, सुशीला नाहर,जैन महिला मंडल, सरिता अग्रवाल,अखिल भारतीय अग्रवाल महिला मंडल, सुशीला तिवारी,पार्षद एवं समाजसेवी, संतोष मिन्नी,अध्यक्ष नवकार महिला मंडल, प्रीति पिंजानी,उपाध्यक्ष सिंध महिला मंडल, सूर्यप्रभा चेट्टीयार,अध्यक्ष जिला महिला कांग्रेस, हेमलता शर्मा, प्रदेश कोषाध्यक्ष महिला मोर्चा, उषा गुप्ता,अध्यक्ष गहोई वैश्य महिला मंडल।

हमारी सोच, तन और मन को भी प्रभावित करती है इसलिए विचारों का सही चुनाव करना सीखें, जिससे सदा हमारे ऊपर अच्छा प्रभाव ही पड़े।

दो हाथों से हम दस लोगों को भी नहीं हरा सकते, परन्तु दो हाथ जोड़कर हम करोड़ों लोगों का दिल जीत सकते हैं।

"दौलत" से सिर्फ सुविधायें मिलती हैं, सुख नहीं।

सुख मिलता है आपस के प्यार से व अपनों के साथ से। अगर सिर्फ सुविधाओं से सुख मिलता तो धनवान लोगों को कभी दुःख न होता।